

केशव प्रसाद वर्मा

जन्म तिथि : 26-02-1938

निवास : मोरियावाँ, बिक्रम, पटना

सिच्छा : बी० ए०

परकासित पुस्तक :

1. सोना के सीता (मगही एकांकी संकलन)
2. कन्हइया के दरद (मगही नाटक)

सम्पादन :

मगही पत्रिका 'पाटलि'

प्रस्तुत एकांकी नाटक 'प्रियदर्शी अशोक' में ऊ समय के ऐतिहासिक बरनन कइल गेल हे। कलिंग-विजय के बाद समराट अशोक के मानसिक स्थिति देखावइत उनकर संका आउ चिन्ता के समाधान कैल गेल हे। ई एकांकी के माध्यम से अशोक के समय गौतम बुद्ध के विचार के प्रभाव देखाना नाटककार के उद्देस्य हे।

प्रियदर्शी अशोक

[1]

पाटलिपुत्र, मगध के राजधानी, राजधानी के महल के एकान्त कोठरी, कोठरी के एक किनारे एगो सुघड़ पलंग, पलंग पर समराट अशोक सांत-चित बइठल हथ। आधा रात के समय, लगातार जागल रहे के कारन अशोक के दुन्नो आँख पूरा सूज के लाल हो गेल हे। कोठरी के दीवार पर एगो खून से रँगायल लाल तलवार झूल रहल हे। अशोक टकटकी लगा के तलवार के देख रहलन हे, न जानी कउन बात इयाद आवइते ऊ बोले लगलन।]

अशोक : कइसन हे महासक्ति ई भुजंगिनी के ! आज ई हम्मर कोठरी के दीवार पर केतना आनन्द से झूल रहल हे ! एकरा में अपार सक्ति हे ! कलिंग मिल गेल न धूल में ? अशोक के माथा पर मौर्य-मुकुट, सोना के मुकुट, ई सहल जा रहल हे ! ओह, ई तो रक्त से सनायल हे, सिर फटल जा रहल हे। हमरा मुकुट न चाही, कलिंग विजय भी न चाही, देखऽ कलिंग के भूमि ! ई तो खूने में नेहायल हे, एकर कन-कन खून से पट गेल हे, कलिंग राज हमरा कोस रहल हे, अशोक राछस हे, निर्दयी, हत्यारा, अप्पन भाई के हत्यारा, चण्डाशोक ! ऊ अप्पन पिता पर चढ़ाई कयलक ! कलिंग के सांति पर हाथ उठयलक। (कुछ इयाद करके) दुर्गन्ध ! मुर्दा के गन्ध ! अरे, कलिंग के भूमि से मुर्दा के गन्ध ! ओह ! रुलाई, चितकार कहाँ से आ रहल हे। (सोंच के) ऊ सुन्दरी बिलख रहल हे ! ओकर माँग के सिन्दूर दोहरावलो न गेल आउ ओकर सोहाग उजड़ गेल। ओह ! अइसन जीउ-हत्या कबहियों न होयल होयत। (बिछावन से उठ के दीवार से टंगल तलवार के अप्पन हाथ में लेके) कइसन सक्तिसाली हे ई खडग ! एकरा में केतना चमक हे। बिजुली नियर चमचम ! ओह ! केतना खून में डुबइली, बाकि एकरा पर खून के रंग न चढ़ल। (अप्पन छाती के तरफ इसारा करके) अब हम अप्पन छाती में डुबा के तोरा देखम, खून के सागर हे एकरा में (खड्ग से अप्पन हत्या करे के कोसिस करेला चाहऽ हथ कि एगो बौद्ध-भिक्षु प्रणयगुप्त के परवेस)

प्रणयगुप्त : महाराज ! ई का ? पलायन, जीवन से पलायन !

अशोक : के ? (प्रणयगुप्त के तरफ देख के) तूँ कइसे आ गेलऽ प्रणयगुप्त ? बौद्ध-भिक्षु ! हम डुबा लेम ई भुजंगिनी के अप्पन छाती में। कलिंग के ई प्रतिसोध !

प्रणय : कलिंग के प्रतिसोध ई न हे कलिंग-विजेता ! ई तो घोर पराजय हे, तोर हार ! विजय चाहे ओला के अप्पन पराजय में आनन्द कहाँ ?

अशोक : हम विजयी न ही बौद्ध-भिक्षु ! हम्मर अन्दर में पस्चात्ताप के भट्ठी जल रहल हे। ओकरा में केतना ज्वाला हे !

प्रणय : विजय के अन्त तो एही पस्चात्ताप के ज्वाला हे, मगध समराट !

अशोक : तब का करीं, भन्ते ?

प्रणय : पस्चात्ताप छोड़ देल जाय महाराज ! विजय के इच्छा के पुरती अप्पन मन पर विजय पावे ओला साधन जुटावे में करीं। अपने कलिंग-विजयी न, विस्व-विजयी बन जायम।

अशोक : बाकि कलिंग के लड़ाई में अनगिनती मनुस के मार-काट से हम्मर अतमा पूरा दुखी हे। मनुस तो ईस्वर के सिरिस्टी हे। मनुस-हत्या सिरिस्टी-करता पर आघात हे, ईस्वर पर अविस्वास हे बौद्ध-भिक्षु !

प्रणय : हँ समराट ! जे नित न हे ओकरा पर बिसवास न कैल जा सकऽ हे। मानव, अतमा, ईस्वर, कउनो नित न हथ।

अशोक : ई कइसे ?

प्रणय : अपने कलिंग के लड़ाई में अनेक जीउ के हनन कइली, सिरिस्टी के बिनास कइली, ईस्वर पर अबिस्वास भेल, ई लेल जीउ, सिरिस्टी, ईस्वर, कउनो नित न हे।

अशोक : बात समझ में न आ रहल हे भिक्षुवर !

प्रणय : ई तो सब कोई जानऽ हे कि जे नित हे, ओकर हनन कइसन ? नित के विनास कइसन ? नित पर अबिस्वासो न कैल जा सकऽ हे ।

अशोक : ई तो ठीक हे।

प्रणय : सोच के देखीं, जीउ उत्पन्न होहे, सिरिस्टी के सिरजन होहे, ईस्वर पर बिस्वास बढ़ऽ हे, बाकि उत्पन्न होय ओला सब जीउ के बिनासो होहे।

अशोक : एही से मनुस, अतमा, ईस्वर, सब अनित हथ ?

प्रणय : हँऽ, एही न तथागत के अनित्यवाद हे !

अशोक : तब ई संसार ?

प्रणय : घटना के प्रवाह हे ! आउ घटना तो काज-कारन के मेल हे। जीउ के नास आउ सिरजन केवल काज हे, जेकर कोई कारन जरूर हे।

अशोक : फिर बात समझ में न आवइत हे भिक्षुवर !

प्रणय : त देखीं; कलिंग पर अपने के चढ़ाई, ओकर हार आउ अपने के विजय, सब एगो काज भर हे जेकरा पीछे अपने के विजय-इच्छा, सेना के सक्ति आउ कलिंग के अयोग्यता कारन हे। ई लेल कलिंग-विजय में मनुस के नास कउनो ईस्वर पर अबिसवास न हे। खाली काज आउ कारन के मेल हे, घटना के समूह।

अशोक : तब भन्ते, ई संसार ?

प्रणय : ई संसार तो सुन्दर आउ असुन्दर तट से घिरल एगो अइसन नदी हे जेकरा में स्वच्छ आउ अस्वच्छ, सीतल आउ गरम जल के महाप्रवाह हे जे अनित सागर में परवाहित होइत रहऽ हे !

अशोक : तब तथागत के एही अनित्यवाद भेल ?

प्रणय : हँऽ मगधपति !

अशोक : बाकि अनित तो परिवर्तन चाहऽ हे।

प्रणय : हँऽ, बुद्ध भी परिवर्तन चाहऽ हलन।

अशोक : आउ जुध भी तो परिवर्तन हे।

प्रणय : बाकि सिव न हे जुध। एकरा से कल्यान न होयत।

अशोक : तब सही कउन मार्ग हे?

प्रणय : मध्यम मार्ग, बीच के मार्ग। ई मार्ग हमेसा सिवं होवऽ हे। सुन्दरो कम न होवे।

अशोक : ई कइसे ?

प्रणय : परवत के छाती फाड़ के जब निरझर नदी के रूप में आगे बढ़ऽ हे, तब ओकर पहिला मार्ग सुरू हो हे। कइसन जुध से भरल रहऽ हे ओकर जीवन ! विसाल चट्टान पर गिर के ओकरा चूर-चूर कर देहे, उछलइत-कुदइत भागल चलऽ हे, जाठ नियर खड़ा तरुवन के गिरा देहे। ऊ समय ओकरा में सुन्दरता रहऽ हे, ओकर कल-नाद में मोहन-मंतर होहे। बाकि ओकर उछलइत जल से एगो कन केकरो पियास मेटा सकऽ हे ? अपने में कउनो कस-बल हे जे ओकर जल के एक्को बूँद अप्पन अंजुरी में ले लेम ?

अशोक : बाकि ओकर सक्ति कम सराहे लायक न हे !

प्रणय : बाकि ओकरा से कल्यान कहाँ हे? ऊ सरिता जब अप्पन मध्यम-मार्ग में आ जाहे, तब सांति पा लेहे ! अपना पर रोक लगा लेहे ! ऊ समय कोई जुध न करऽ हे। ओकरा में हमनी डुबकीओ लगा लेही। हमनी के पियास मेटा देहे। केतना कल्यान करऽ हे !

अशोक : आउ अन्तिम मार्ग भन्ते ?

प्रणय : ऊ तो मिरतु हे। कउनो गति न, कउनो परिवर्त्तन न !

अशोक : तब तो मध्यम-मार्ग ही अच्छा हे ।

प्रणय : विकास के मार्ग क्रान्ति से भरल रहऽ हे। ओकर बाद के मार्ग कल्यानमय आउ अन्तिम मार्ग सांतिपूर्ण हे मगधपति ! अपने के विकास मार्ग के फल हे हत्या, मार-काट, नरसंहार ! मध्यम मार्ग ग्रहण करीं। एकरा से अपने के राज में सुव्यवस्था बढ़त आउ राजसत्ता लोकसत्ता बन जायत।

अशोक : तब एकरा ला नीति कइसन होयत ?

प्रणय : पंचसील, तथागत के पंचसील !

अशोक : पंचसील !

प्रणय : हँऽ, पड़ोसी राज के स्थिरता आउ पूर्णता पर बिस्वास के साथे अप्पन आपसी सरोकार रखीं, कउनो राज पर चढ़ाई न करीं, कउनो राजा के भीतरी विचार में कउनो रोक-टोक न करीं, सबके साथे समानता आउ आपसी प्रेम-भाव रखीं आउ सांतिपूर्ण सह-अस्तित्व में बिस्वासो करइत रहीं, एही तथागत के पंचसील हे महाराज !

अशोक : हम एकरा अप्पन मार्ग-दर्सन स्वीकार कर लेली भिक्षुवर !

प्रणय : तब तो अपने के भीतरी देवता जाग गेलन, पस्चात्ताप के अगनी भी राख हो गेल। अब अपने चण्डाशोक न, प्रियदर्शी अशोक कहल जायम।

अशोक : तब जाईं भिक्षुवर ! भिक्षु संघ के तीसरा संगति के आयोजन मगध में करीं। राज-कोस के अधिक से अधिक अंस बौद्ध-सेवा में खर्च

होयत। बौद्ध-भिक्षु विदेस में भेजल जयतन। बौद्ध-धरम के परचार होयत। संसार के कन-कन में बौद्ध-धरम परम संगीत बनके समा जायत। मगधपति अशोक सुधा बरसावत, अमरित, जेकरा से धरती सुधामयी बन जायत। भोर के किरन में बौद्ध के अमर संगीत होयत, पंछी के कलरव में एही संगीत गूंजत, निरझरनी के कल-कल निनादो से एही संगीत फूटत, अमर संगीत, कल्यानकारी संगीत, सत्यं सिवं सुन्दरं !

(पट-परिवर्त्तन)

[2]

[नगर से दूर प्रणयगुप्त के आश्रम अकेले प्रणयगुप्त धेयान में लीन हथ। कलिंग के राजकुमार देवेन्द्र के परवेस]

देवेन्द्र : आचार्य !

प्रणय : (चुप)

देवेन्द्र : गुरुदेव !

प्रणय : के ? देवेन्द्र ! राजकुमार देवेन्द्र !

देवेन्द्र : हँऽ भन्ते !

प्रणय : तूँ तो अशोक के कैदखाना में कैद हलऽ ?

देवेन्द्र : हँऽ आचार्य !

प्रणय : तऽ अशोक तोरा छोड़ देलन ?

देवेन्द्र : शेर के सिकारी जाल में फँसल शेर के छोड़ देहे कहीं ?

प्रणय : तऽ तूँ अप्पन मुक्ति ला अशोक से दया के भीख माँगलऽ ?

देवेन्द्र : कलिंग के कुमार देवेन्द्र एतना बलहीन हो गेल कि अशोक से दया के भीख माँगत !

प्रणय : तऽ कइसे अयलऽ ?

देवेन्द्र : मगध महारानी तिस्यरक्षिता के भूल आउ मगध सेनापति के वीरता के कारन।

प्रणय : साफ-साफ बतावऽ कुमार !

देवेन्द्र : अशोक के नइकी रानी तिस्यरक्षिता हमरा पर मुग्ध होके हमरा से प्रेम-संबंध के प्रार्थना कयलन। ओकरा हम अप्पन सौर्य के प्रति चुनौती समझ के महारानी के प्रार्थना ठुकरा देली।

प्रणय : धन्य हऽ देवेन्द्र ! कलिंग वंस में अइसने राजकुमार होवऽ हथ।

देवेन्द्र : बाकि गुरुदेव ! ओही समय मगध सेनापति आ गेलन आउ महारानी उनका हम्मर गर्दन काटे के आदेस दे देलन।

प्रणय : तब का होयल कुमार ?

देवेन्द्र : होयत का गुरुदेव ! सच तो जीतऽ हे न ! हम अप्पन सच सेनापति के आगे रख देली। सेनापति महारानी के प्रस्ताव से दुखी हो गेलन आउ जेल के दरवाजा खोल के हमरा निकाल देलन !

प्रणय : तब ?

देवेन्द्र : हम मुक्त ही। हम्मर रोम-रोम प्रतिसोध के आग में जल रहल हे।

प्रणय : बाकि प्रतिसोध तो जुध के समर्थन हे।

देवेन्द्र : जेकर रग में एक्को बूँद गरम खून रहत ऊ जुध चाहत, प्रतिसोध चाहत। कउनो मूर्ख महानाग के फन पर चोट मारत आउ महानाग ओकरा नास न करत ?

प्रणय : बाकि ऊ विसाल पेड़ तोरा पर टंगारी न चलावऽ हे जेकर डाल के तूँ काट दे हऽ। ऊ तो तोरा अप्पन फल आउ छाया देहे जब तूँ ओकरा पास जा हऽ।

देवेन्द्र : बाकि अशोक तो अइसन पेड़ हे जेकर डाल-पात ही विसैला हे। ओकर छाया में विस हे, जलन हे, भयंकर जलन।

अचानक महाराज अशोक के आगमन ।

अशोक : कुमार देवेन्द्र ! वीणा के तार के एतना मत अँइठऽ कि टूट जाय। अधिक अइँठन पाके केतना वीणा तार-तार हो गेल।

प्रणय : महाराज अशोक ?

अशोक : हँऽ, मगध समराट अशोक, जेकर वीणा अधिक अइँठन पाके टूट गेल हे।

प्रणय : भगवान बुद्ध तो कहलन हे कि वीणा से निमन राग निकाले ला वीणा के तार के सम पर रक्खऽ !

देवेन्द्र : जउन भंभावात फलल-फूलल वाटिका के उजाड़ देहे, ओकरा सम पर आवे के बात कबहिओं न सोचल जा सकऽ हे। ऊ तो सरबनासे करत। मगधपति चण्डाशोक हथ भंभावात, भयंकर, ई तो विनासे करतन !

अशोक : न-न देवेन्द्र ! भगवान बुद्ध के उपदेस अइसन गिरिराज हे जेकरा पास पहुँच के भयंकर से भयंकर भंभावात थम जाहे। ऊ सम पर आ के सीतल-मंद-सुगन्ध पवन बन जाहे।

प्रणय : हँऽ राजकुमार ! समराट अशोक बुद्धत्व प्राप्त कर लेलन हे ! ऊ अब सान्त पवन नियर विचरतन, भोर के किरींग नियर सुतल लोग के जगयतन। बरसा के मेघ नियर अमरित बरसयतन।

देवेन्द्र : तब तो हम खो के भी पा गेली। हार के भी जीत गेली।

अशोक : हार के जीत गेली !

देवेन्द्र : अचरज के बात न हे समराट ! अपने कलिंग पर चढ़ाई कइली। कलिंग-राज बौद्ध-धरम मानऽ हलन आउ अपने सनातन धरम। दुन्नो धरम के बीच कइसन लड़ाई भेल ! खून के नदी बहल, कलिंग-राज मारल गेलन। कलिंग तो बरबाद हो गेल, बाकि अपनहीं कहीं, का सनातन धरम जीत गेल ?

अशोक : न, हम बौद्ध-धरम मान लेली। बौद्ध-धरम जीत गेल, हम हार गेली। कलिंग जीत गेल। तूँ कलिंग के राजकुमार हऽ, तोरा हम अभिसेक करम, कलिंग के सिंहासन पर बइठायम।

प्रणय : कुमार ! कलिंग तोरे हे, कलिंग के तूँ अधिकारी हऽ। अब प्रतिसोध के भावना छोड़ दऽ ! देखऽ, समराट के हाथ में राजमुकुट हे, तूँ झुक जा ! धरातल अप्पन बाँह फैला के अकास से महामिलन करे ला तइयार हे !

[अशोक अप्पन हाथ उठा के देवेन्द्र के मुकुट पहनावेला चाहित हथ । देवेन्द्र के माथा झुक जाहे। अशोक मुकुट पहना देलन ।

नेपथ्य में अवाज होइत हे—भगवान बुद्ध के जय ! प्रियदर्शी अशोक के जय !]

[पट-परिवर्त्तन]

[3]

[अशोक के राजमहल । महल के पास फैलल मैदान । एही मैदान में अशोक बौद्ध-भिक्षु-संघ के तिसरका संगति के आयोजन कइलन हे। चारो दिसा भेद के संख आउ भेरी के अवाज लगातार हो रहल हे अवाज सुनके चारो तरफ से जन-समूह उमड़ल आ रहल हे। जन-समूह के कोलाहल के चीर के आवइत अवाज सुनाई पड़इत हे–भगवान बुद्ध के जय ! देवानाम् प्रियदर्शी अशोक के जय !

जन-समूह के आगे मंच पर समराट अशोक आउ बौद्ध-आचार्य प्रणयगुप्त दिखाई देइत हथ। प्रणयगुप्त जन-समूह के सम्बोधित करके कहे लगलन]

प्रणय : कलिंग-विजय से समराट अशोक के दिल में असान्ति फैलल हे, बाकि उनका सांति के सागर भगवान बुद्ध के उपदेस प्राप्त हो गेल हे। अब ऊ सांति प्राप्त करेला देस-बिदेस में बौद्ध भिक्षु भेजतन ! एही उपदेस देवेला आज बौद्ध-भिक्षु-संघ के तिसरका संगति के आयोजन करल गेल हे।

एगो अवाज : देवानाम प्रियदर्शी अशोक के.....

जन-समूह : जय !

प्रणय : मगध के नागरिक लोग ! सान्त होवऽ, सान्त होवऽ ! देखऽ, तोरा लोग के आगे महान भिक्षु आउ भिक्षुनी के दल आ रहलन हे। ई दल सान्ति-विजय करेला विदेस में जयतक। सबसे आगे के हे ? जन-समूह तो पहचान गेल होयतन ! ई हथ कलिंग के राजकुमार देवेन्द्र ! इनका पीछे मगध के सामन्त आउ परमुख नागरिक हथ ! सब कोई बौद्ध-भिक्षु बन गेलन हे।

[सब भिक्षु आउ भिक्षुनी के पोसाक एक्के तरह के हे....पीला वस्त्र के बनल चोंगा, जेकरा अन्दर सब सरीर ढँकल....हाथ में

काला रंग के तुम्बी.....भिक्षा-पात्र, दूसर हाथ में बौद्ध-ग्रंथ। भिक्षु के दल जन-समूह के आगे आके रुक जाहे। राजकुमार देवेन्द्र के अवाज सुनाई पड़ऽ हे।]

देवेन्द्र : बुद्धं शरणं गच्छामि !

भिक्षु के दल : बुद्धं शरणं गच्छामि !

देवेन्द्र : धम्मं शरणं गच्छामि !

भिक्षु के दल : धम्मं शरणं गच्छामि !

देवेन्द्र : संघं शरणं गच्छामि !

भिक्षु के दल : संघं शरणं गच्छामि !

[धीरे-धीरे परदा गिर रहल हे]

अभ्यास-प्रश्न

मौखिक :

1. (क) एकांकी के मुख्य तीन गो तत्व बतलावऽ ।

   (ख) पट-परिवर्तन केकरा कहल जाहे ? पट-परिवर्तन के नाटक में का उपयोगिता हे ?

   (ग) तीसरा दिरिस में अशोक के राजमहल के आकर्सण बतावऽ।

   (घ) जे छूट गेल हे ओकरा पूरा करऽ :

   (i) बुद्धं शरणं गच्छामि !

   (ii) .....

   (iii) .....

   (ङ) कलिंग विजय के बावजूद समराट अशोक के दिल में असान्ति काहे फैलल हे ? समझावऽ ।

लिखित :

1. 'प्रियदर्शी अशोक' के लेखक के परिचय पाँच वाक्य में देवल जाय।
2. 'सोहाग उजड़ गेल' कहे के तात्पर्य बतावऽ।

3. प्रणयगुप्त कउन हथ ?

4. 'विजय' आउ 'पराजय' में संबंध बतावल जाय।

5. 'मनुस तो ईस्वर के सिरिस्टी हे' के का मतलब हे?

6. तथागत के 'अनित्यवाद' पर पाँच वाक्य लिखऽ।

7. गौतम बुद्ध के 'मध्यम मार्ग' पर पाँच वाक्य लिखऽ।

8. 'मिरतु' कउन मार्ग हे ?

9. 'पंचसील' के पाँचो सील बतावऽ।

10. 'चण्डाशोक' आउ 'प्रियदर्शी अशोक' में का फरक हे ?

11. 'खून से रंगायल तलवार' के का मतलब हे ?

12. सप्रसंग व्याख्या कैल जाय :—

(क) शेर के सिकारी जाल में फँसल शेर के छोड़ देहे कहीं ?

(ख) वीणा के तार के एतना मत अँइठऽ कि टूट जाय।

(ग) ई संसार तो सुन्दर आउ असुन्दर तट से घिरल एगो अइसन नदी हे जेकरा में स्वच्छ आउ अस्वच्छ, सीतल आउ गरम जल के महाप्रवाह हे, जे अनित सागर में परवाहित होइत रहऽ हे।

13. 'एकांकी नाटक' केकरा कहल जाहे ?

भासा-अध्ययन

1. पाठ में 'आग में जलना' एगो मुहावरा आयल हे। एकरा अलावे पाँच गो मुहावरा चुनके ओकरा से वाक्य बनावऽ।

2. पाठ में आयल तत्सम सब्द चुन के बतावऽ।

3. समास बतावऽ :
मार-काट, नरसंहार, अशोक, पंचसील, देवेन्द्र ।

योग्यता-विस्तार :

1. विद्यालय के वार्सिक उत्सव में ई एकांकी खेलऽ आउ अभिनय के बाद एकांकी के त्रुटि आउ विसेसता बतावऽ।

2. 'पर्यावरण परदूसन' पर एगो एकांकी लिखऽ ।

3. ऐतिहासिक आउ समाजिक नाटक में से तोरा कउन अच्छा लगऽ हे, ओकर कारन बतावऽ ।

4. नाटक आउ एकांकी में मुख्य अन्तर लिख के शिक्षक के देखावऽ।

सब्दार्थ :

खून से पट गेल	—	खून के धारा बह गेल
बिलख रहल	—	रो रहल
पलायन	—	भाग जाना
भुजंगिनी	—	नागिन, तलवार
पस्चात्ताप के भट्ठी	—	पछतावा के गरमी (आग)
विस्व-विजयी	—	संसार के जीतेवला
जीउ के हनन	—	जीउ-हत्या
काज-कारन	—	काम आउ ओकर कारन
उछलइत-कुदइत	—	ऊपर-नीचे होइत
कल-नाद	—	कलकल ध्वनि
कस-बल	—	ताकत
सौर्य	—	वीरता
प्रतिसोध	—	बदला
टंगारी	—	पेड़ काटे के औजार
झंझावात	—	अंधड़-तूफान
भोर के किरींग	—	सुबह के किरन



•••



घमण्डी राम

घमण्डी राम के जनम पटना जिला के बिक्रम थाना के बेनी बिगहा गाँव में 9 जनवरी 1946 के भेल । इनकर प्राथमिक सिच्छा गाँव के विद्यालय में भेल, उच्चतर सिच्छा मगध विस्वविद्यालय आउ पटना विस्वविद्यालय में भेल। ई बिहार शिक्षा सेवा संवर्ग के पद पर रहके काम करइत रहलन हे। ई मगही से एम.ए. हथ।

ई मगही मातृभासा के विविध विधा के भंडार भरइत रहलन। नाटक, एकांकी, सब्दचित्र, कहानी, लघुकथा, संस्मरण, गीतरूपक, कविता, निबंध, लोकगीत आउ प्रबंधकाव्य जइसन विधा पर कलम चलयलन हे। इनकर बहुमुखी प्रतिभा आउ स्तरीय साहित्य सेवा देख के बिहार सरकार राजभासा विभाग 'डा० ग्रियर्सन पुरस्कार' से, बिहार राष्ट्रभासा परिसद्, पटना 'लोकभासा साहित्य सेवा पुरस्कार' से आउ भारतीय दलित साहित्य अकादमी, दिल्ली 'डा० अम्बेडकर फेलोसिप अवार्ड' से सम्मानित कयलक हे।

इनकर अबतक मगही आउ हिन्दी में कुल सोलह रचना परकासित हो गेल हे, जेकरा में प्रमुख हे **'माटी के मरम'** (मगही सब्द-चित्र) **'सोहाग के भीख'** (मगही एकांकी संग्रह) **'गीत अदमी के'**, (मगही कविता संग्रह) **'धरती के गीत'** (मगही लोकगीत संग्रह) **'दिल के घाव'** (मगही गजल संग्रह) **'कथा बतीसी'** (मगही लघुकथा संग्रह), **'खोंइछा के चाउर'** (मगही निबंध संग्रह) **'माटी के सिंगार'** (मगही सब्द-चित्र संग्रह) आउ **'एकलव्य'** (मगही महाकाव्य)।

एकरा अलावे इनकर हिन्दी के भी चार गो रचना परकासित हे। ई अप्पन सुललित कंठ से कविता सुनाके मोह लेवऽ हथ। ई अभी सेवा-निवृत होके बल्लमीचक, अनीसाबाद, पटना में साहित्य सेवा कर रहलन हे।

सब्द-चित्र साहित्य के एगो विधा हे जेकरा माध्यम से कोई बेकती के फोटो जस के तस बना देवल जाहे। सब्द-चित्र संस्मरन के एगो विकसित रूप हे जेकरा में सच्चो के कोई अदमी के चित्र खींचल जाहे। सब्द-चित्र के नायक कोई मनगढ़ंत पात्र न होवऽ हे।

सनीचर एगो गाँव–गिराँव के दलित समाज के अइसन पात्र हे जे लेखक के काफी परभावित कैलक। ओकरा माध्यम से गाँव-गिराँव के पूरा परिवेस के चित्र खिंचइत लेखक सनीचर के चरित्र के विसेसता के उजागर कैलन हे। एकर माध्यम से समाजिक मेल-मिलाप के दरसन करावल गेल हे।

सनीचर

बेनी बिगहा के अखाड़ा आउ खरकपुरा के दह जइसे नामी हल, ओइसहीं चिचौड़ा के सनीचर के जूता नामी हल। इनकर जूता बड़ी दूर-दूर तकले जा हल—बिना विज्ञापन के, बिना कोई परचार के। लोग सपर के इनका हीं जूता खरीदे आवऽ हलन। ऊ जूतो बनावऽ हलन एक नम्बर के, डिजाइन होवे इया न, बाकि टिकाऊ खूब। दू साल खूब धँगच के पेन्हऽ, बीच में टूट गेला पर फेंक आवऽ उनकर कोठरी में। नया करके ऊ अपने से घरे पहुँचा अयतन। गाँव-जेवार के बात हे, एक्के जगह रहेला हे, कउन मुँह लेके ऊ जयतन लोग भिर। कलोटन भाइए हथ, करमू इयारे। पहलाद चचे हथ, बिन्दा सिंह मालिके—केकरा ठगथ—मुखिया के ? सरपंच के ? सब तो अपने हथ—एक्के गाँव, एक्के जेवार के। बिजनेस से जादे चिन्ता उनका अपनापन के हे, भाईचारा के हे। सच पूछऽ तऽ बिजनेस के खेयाल से ऊ जूता बनयबे न करऽ हलन। ई तो उनकर हिरदय के अनुराग हल, मन के मुराद हल। मन में आयल—बइठ गेलन एगो डिजाइन लेके। काटे लगलन चमरा, ठोके लगलन काँटी। सी रहलन हे, ठोक रहलन हे।

सनीचर दू तरह के जूता बनावऽ हलन—चमरुआ आउ कुरुम के। कुरुम के जूता ला चमरा बाहर से मँगावऽ हलन, बाकि चमरुआ घर के चमरा से। गाँव-जेवार के जेतना गोरू-डांगर मरऽ हल, सबके ईहे चीरऽ हलन। ओकरे चाम पका के, सुखा के बड़ी हिसाब से रक्खऽ हलन । ओही चाम से जूता बनावऽ हलन। इनकर ईहे जूता नामी हल, चमरुए जादे बिकऽ हल। पहिले लोग चमरुए पेन्हबे करऽ हलन, आज लेखा सौखीन न हलन। डिजाइन होवे चाहे न, मोलायम होवे के चाही, टिकाऊ होवे के चाही। इनकर जूता लोग के इहे फरमाइस के पुरती करऽ हल। माँग पर धेयान जादे, पुरती पर कम रखऽ हलन। आज ऊ जिन्दा रहतन हल आउ उनकर कला आउ ईमान से लाभ उठावल जाइत हल, तऽ जेवार भर का, प्रान्त से बाहर भी उनकर जूता के माँग बढ़ जाइत हल। एगो अच्छा फैक्ट्री खुल जाइत हल। केतना लोग के गुजर-बसर करे के एगो धंधा चल जाइत हल गाँव-जेवार में।

बाकि ऊ घड़ी कोई धेयान न देलक। ई तो बेचारे अनपढ़ हइए हलन, गाँव के पढ़लो-लिखल लोग एकरा पर धेयान न देलन। जन्ने गेलन ओन्ने अप्पन कला आउ ईमान दुन्नो लेले गेलन। उनकर खनदान के लोग हथ, बाकि ओहू लोग ई धन्धा न सिखलन। हमरा लगऽ हे कि आज के जुग-जमाना के पूरा ज्ञान ऊ लोग के पहिलहीं से हल। जानइत हलन कि आज के लोग ईमान पर न, पइसा पर बिकतन, कला पर न, परचार पर मरतन। एही से उनकर परिवार के कोई ई काम न सिखलक।

उनकर एगो बेटा हे। हरवाही करऽ हे। बाजा बजावऽ हे बिआह-सादी में। एकरा नापसन्द हल ई काम। ई ओही-घड़ी बाप के बोलइत रहऽ हल, झिड़कइत रहऽ हल जब-तब—'अइसन बिजनेस करके का करत जेकरा से कोई लाभ न हे। बड़ाई के पुल बाँधला से पेट भरत ? तोरा तो लोग सीधा जान के तनिए सा बड़ाई कर देत—बस, तुम्मा लेखा फूल जयबऽ, घिरनी लेखा नाचे लगबऽ।'

सचमुच ऊ नाचे लगऽ हलन जब कोई कह देवऽ हल—'सनीचर चा ! तनि अप्पन जूता के करमात देखलावऽ तो।' फिर का हल—एतना कहना हे कि हाथ के जूता पैर में डाल के आ ठुमुक-ठुमुक के नाचे लगथ। कभी दउर के, कभी उछल के जूता के नमूना देखावे लगथ। अन्त में पैर से निकाल के हाथ में लेके दू बाजी फट-फट जमीन पर बजार देथ, दुन्नों के मिलाके पट-पट बजा देथ। फिर का हल—एतना करइते चार गहँकी तइयार। पाँच गो बेयाना हाजिर।

बाकि ऊ तो पसेने-पसेने, हाँफइत, पोंछइत कल्लू के पैर निहारथ, जीतू के जूता निरेखथ। पचाक से मुँह में भरल पिलकी फेंक के कहे लगथ—'ई देखऽ आउ ऊ देखऽ। एगो हम्मर बनावल आउ एगो बाटा के। एगो मुँह बयले हे, एगो चमगादर लेखा सटल हे। दुन्नो के मिलान करऽ, दाम में केतना के फरक हे। बाटा के होयला से का होवऽ हे। तूँ लोग तो डिजाइन पर मरबऽ। टिकाऊ होवे चाहे न, देखनग होवे के चाही—जइसे लगऽ हे कि एकरे में मुँह निहारे ला हे। अरे भाई ! जूता पेन्हे ला हे कि मुँह देखे ला। तीन साल पेन्हलन होवे आउ दू साल अभी पेन्हतन। का हो कल्लू भाई ! झूठ कहित ही तऽ कहिहऽ। कै पइसा देलऽ हल ? बिआहो कर लेलऽ बेटा के। हमरे जूता पेन्ह के समधी बनके पैरो पुजा अयलऽ। भउजी के कहला पर बनइली हल आउ तनि बुनियो न खिलयलन।'

ई तरह से ऊ अप्पन जूता के परचार करऽ हलन, जूता के बिकरी करऽ हलन। जे पेन्हलक से दाम सधा के छोड़लक। इनकर एगो आउ सिफत हल—जूता टूट

गेला पर मुफ्त सिलाई, बिना पइसा के मरम्मत; गारंटी तीन साल, बीच में टूट गेला पर पइसा वापस इया जूता बदली। इहे से इनका भिर भीड़ लगल रहऽ हल। गारंटी के पहिले जूता टूट गेला पर बड़ी छान-बीन करऽ हलन। बड़ी गौर से देखऽ हलन—का कारन हे ? हम्मर ईमान आउ कला पर दाग तो न लग रहल हे। कभी जूता देखथ, कभी गहँकी के मुँह—'दू पइसा के रेंड़ी के तेल न जुटऽ हलवऽ। आउ न हलवऽ तऽ हमरो हीं से ले जाय ला छुट्टी न हलवऽ। अपने खा पीअऽ हऽ कि न, देह में तेल घँसऽ हऽ कि न ? जिन्दा चाम के तेल चाही आउ मरला के ? मरल चाम तो तेले से ठहरबे करऽ हे।'

एतना कहके ठाँय-ठाँय जूता के जमीन पर पटकथ, फिर कहथ—'जन्ने जयबऽ ओन्ने घँसेटले चलबऽ। एकरा जान हइ कि न ? गरमी में कइसे पसेना छुटऽ हवऽ। पेड़ के छाँह तर बइठ के अराम चाहऽ हऽ। चाम हइ तऽ का, एकरा अराम न चाही। देखऽ तो—सरधे मुँह बयले कीचड़-पानी में घँसेटले चललऽ। ई न कि चार आना के एगो चट्टी खरीद लीं। टूटइ नऽ, कीचड़ में गाड़ देबऽ, तऽ कै दिन ठहरतइ। मिल गेलन हे सनीचर, सस्ता दोकनदार–चलऽ फेंक आवऽ, बनयतन न तऽ कहाँ जयतन। जबले सनीचर हथ तबे ले, फिर तो अफसोस करबऽ। एही जुतवा ला तरसबऽ। एतना कहइत एगो चिप्पी साट देथ—चार गो काँटी ग़ार देथ आउ फेंक देथ गहँकी दन्ने। जादे खराब होयथ तऽ एक-दू दिन मौका लेथ।

कोई इनकर जूता के सिकाइत कर देवे, तऽ झट से जेबी से पइसा निकाल के कहथ—'निकाल दऽ जूता, ई लऽ अप्पन दाम वापस।' बाकि वापस के लेवऽ हे—ऊ तो एगो खिलवाड़ हल, मजाक हल उनका कउँचावे ला। सनीचर के जेतना जूता बिकल ओकरा से जादे ऊ परसंसा पयलन। जन्ने जयतन ओन्ने झोला टाँगले–दू जोड़ा काँख तर, एक जोड़ा हाथ में। केकरो दूरा पर बइठ जयतन—कोई सरबत ला पूछइत हे, कोई सतुआ ला, कोई खइनी खिलावइत हे; कोई बीड़ी पिलावइत हे। कोई मड़ुआ के रोटी खिला रहल हे, कोई नयका धान के चूड़ा फँका रहल हे। केकरो हीं भूँजा, केकरो हीं फुटहा जरूर मिलत इनका। ई सब इनकर जूता के ईनाम हे, काम आउ कला के मजूरी हे। इनकर व्यक्तित्व के परसंसा हे।

उनकर व्यक्तिव में चार चाँद लगावेओला एगो आउ गुन हल—बाजा पर नाचे के गुन, दुआरी लगइत खानी छड़पे के गुन। इनकर बाजा में कठघोड़वा के नाच न जा

हल। मोर-मोरनी के नाम ऊ घड़ी न हल। नाम हल सनीचर के नाच के, डोमन के बाजा के। डोमन बजावऽ हलन डंका, सनीचर बजावऽ हलन झाल। जइसन सनीचर नाचे ओला ओइसने डोमन बजावे ओला। डोमन के चाप आउ सनीचर के ताल बड़ा मेल खा हल। जखनी सनीचर नाचे लगऽ हलन तखनी डोमन के चाप डंका पर साँप लेखा झनझनाये लगऽ हल। बिजली के कड़क आउ देवाल गिरला के अवाज होवऽ हल इनकर डंका से।

खुस होके कोई नोट साटइत हे, कोई इनाम गछइत हे—धोती के इनाम, लुगा के इनाम, इनामे इनाम, वाह रे सनीचर ! कमाल कर देलन ! बेटिहा चेहा जाये, कठघोड़वा के धेयान भुला जाये। अइसन नाच बाजा पर ! ओहू अदमी के नाच ! केतना फुरती हे सरीर में, कइसन कलाबाजी हे कमर में। कोई पेन्हावा न, कमर पर से धोती, एगो गोल गला गंजी इया कुरता, माथा में गमछा । हँऽ, गमछा लाजवाब, रंगीन, झक-झक। माथा में अइसन बान्धऽ हलन कि नाचित खानी ऊ पंछी के दूगो पाँख लेखा, हवाई जहाज के डैना लेखा बन जा हल। देख के लगे कि कोई चील मड़रा रहल हे, कोई जहाज हवा में तैर रहल हे।

एन्ने दुआरी लगल खतम, ओन्ने सनीचर परेसान। लोग जुटल हथ सट्टा लिखावे ला, बेयाना देवे ला, बाकि सब पहिलहीं से बुक। एकाध गो लगन बचइत हे, तऽ ओकरा ला झगड़ा, मारामारी के नौबत। सनीचर केकर सट्टा लिखथ, ई लेल पसेने-पसेने, गिल-पिल। अन्त में निरनय भेल कि अभी खायल-पिअल जाय, देखऽ, लइका के बोलहटा आ गेल। उठऽ हो डोमन, तनि ठोकऽ ताल। सनीचर उठके ताल ठोके के पहिलहीं एक छलाँग मार देथ, घोड़ा लेखा हिनहिना देथ। समियाना हिल जाय। बरतिअन अकचका जाय—'का भेल ?'

कुच्छो न, सनीचर के घोड़ी बेहाथ हो गेल हे। वाह रे सनीचर ! सब कोई ओनहीं ताक के हँसे लगथ, ठहाका मारे लगथ। अइसन हल उनकर गोर में फुरती, देह में चुस्ती। अन्तिम घड़ी बेचारे थक गेलन हल, तइयो टिटकारी मारला पर हिनहिनाए लगऽ हलन। सचमुच घोड़ा हलन, बाजा के अवाज सुनइते हिनहिनाये लगऽ हलन, ताल पर जमे लगऽ हलन। सरीरो हल घोड़े लेखा गठल ! गोर भक-भक, रूपगर भी ओइसने। जखनी केकरो हीं मिलल पिअरी पहिर लेवऽ हलन, तखनी उनकर रूप देखे जुकुर हो जा हल।

बाकि ई रूप उनकर लगने भर रहऽ हल। असाढ़ चढ़इते धरती मइया के गोदी में । ऊ घड़ी देखऽ मजदूर किसान वला उनकर रूप । कभी हाथ में कुदाल,

कभी कान्हा पर हर। हर जोतऽ हलन त नाचऽ हलन। डोमन के डंका पर टिटकारी मारऽ हलन। हँऽ, इनका से बोझा न चलऽ हल। सच पूछऽ तऽ लचारी में बेचारे ई काम करऽ हलन। जूता बनावे में उनका जादे मन लगऽ हल।

अब बेचारे न हथ। एक दिन उधरे से जाइत हली। उनकर झोपड़ी भिर पहुँच के पुकारली—'सनीचर चा हऽ हो ?'

कुछ देरी के बाद उनकर पुतोह आयल। बड़ी दुख भर के बोलल—'आयँ, न जानइत ही अपने, ऊ सावने में मर गेलन, ठीक अमावस के दिन।'

आज ऊ न हथ, बाकि उनकर नाम हे। उनकर जूता न हे, बाकि उनकर कला आउ ईमान के नाम आज भी हे। आजो कउनो बात में परतुक दिआ हे—'अरे, का सनीचर के जूता लेखा टाँगले चलइत हऽ।' हिरदय रो उठऽ हे, मन मसोस जाहे—अभी ऊ जिन्दा रहतन हल।

सनीचर के साथे उनकर कला भी बिला गेल, उनकर ईमान भी उपह गेल। कोई करिये का सकऽ हे। कला के जिन्दा रक्खेला कसउटी चाही, ईमान के बचावेला इन्सान चाही। आज न तो कसउटी हे न इन्सान। तऽ हे का ? खाली देखावटी–बनावटी—ऊपर ढोल, भीतर से पोल। टिप-टौप जादे। देखा-देखी सब डलडे में छना रहल हे, बिना दूधे के पकवान बन रहल हे। घीउ कहाँ से आवे; दूध कहाँ से मिले, सब तो किनारा कस लेलक हे। इहाँ कदर कहाँ, कसउटी कहाँ जे ठहरे। जे हे सेहू पछता रहल हे, हुलुक रहल हे, भागे ला मौका ढूँढ़ रहल हे। मिलावट के जुग में खाँटी कहाँ ? खाँटी हे भी, तऽ बिस्वास कहाँ ? जब बिस्वासे उठ गेल, तऽ इन्सान रह के करत का ? ठीक भेल—बेचारे सनीचर चल गेलन, इज्जत-पानी से निबह गेलन।

अभ्यास-प्रस्न

मौखिक :

1. (क) सनीचर के जूता बनावे के का खूबी हल ?

   (ख) सनीचर जूता कइसे बनावऽ हलन ?

   (ग) सनीचर अप्पन जूता के करमात कइसे देखावऽ हलन।

(घ) 'सनीचर के घोड़ी बेहाथ हो गेल हे'—एकर भाव समझावऽ।

(ङ) सनीचर के सरीर के फुरती कइसन हल ? बतावऽ !

लिखित :

1. सब्द-चित्रकार घमंडी राम के परिचय पाँच वाक्य में दऽ।
2. सनीचर अप्पन काम के बिजनेस न बनयलन हे, एकर कारन का हे ? एकरा पर चार वाक्य लिखऽ।
3. जब सनीचर नाचे लगऽ हलन तब कइसन माहौल पैदा हो जा हल ?
4. सनीचर जब बोलऽ हलन तब ओकर परभाव सुनेवला पर कइसन पड़ऽ हल ?
5. 'भउजी के कहला पर बनइली हल आउ तनि बुनिओ न खिलयलऽ'—एकरा में तोरा समझ से कउन भाव प्रकट हो रहल हे ?
6. 'सनीचर एगो ईमानदार कारीगर हलन'—ई साबित करेला उनकर पाँच गो बिसेसता बतावऽ ।
7. 'चाम हइ तऽ का समझइत हलहुँ, एकरा अराम न चाहीं'—एकर माध्यम से सनीचर अप्पन हिरदय के कउन भाव बतावेला चाहऽ हलन ?
8. 'एन्ने दुआरी लगल, ओन्ने सनीचर परेसान'—ई पंक्ति के पाठ में लावे के रहस्य बतावऽ ?
9. पहिले के बिआह आउ आज के बिआह के ठाट-बाट में का अंतर हे ?
10. नीचे लिखल पंक्ति के व्याख्या करऽ :—

    आज तो कसउटी हे न इन्सान। तऽ हे का ? खाली देखावटी, बनावटी—ऊपर ढोल, भीतर पोल। टिप-टौप जादे। देखा-देखी सब डलडे में छना रहल हे, बिना दूधे के पकवान बन रहल हे, घीउ कहाँ से आवे।

11. आज सनीचर तोरा सामने ठाड़ हो जयतन, तब तोर मनोदसा पर का प्रभाव पड़त ? पाँच वाक्य में बतावऽ ?

भासा-अध्ययन :

12. पाठ से पाँच गो मुहावरा चुनके ओकर अर्थ बतावऽ ।
13. पाठ के चार गो सहचर सब्द बतावऽ ।
14. पाठ में मगही भासा के अलावे दोसर भासा के आयल सब्द बतावऽ ।

योग्यता-विस्तार :

1. सब्द-चित्र का हे ? कोई अइसने सब्द-चित्र लिखऽ ।
2. मगही इया हिन्दी के कोई सब्द-चित्र चुन के लावऽ आउ किलास में सुनावऽ।

सब्दार्थ :

सपर के	—	सोच के
डिजाइन	—	नमूना
धँगच के	—	कचड़ के
चमरुआ	—	चाम के बनल

●●●





हरीन्द्र विद्यार्थी

जन्म : 25 दिसम्बर 1948

आवास : यौधेय भवन, तिलकनगर, रुकनपुरा, बेली रोड, पटना-14

सिच्छा : मगही (एम.ए.)

सम्प्रति : अध्यापक श्री गि० कु० उ० वि०, मसौढ़ी, पटना

सम्पादन : मसौढ़ी आवाज

सम्मान/पुरस्कार :

1996 : भारतीय दलित साहित्य अकादमी, नई दिल्ली द्वारा 'डॉ० अम्बेडकर फेलोशिप एवार्ड से सम्मानित ।

2000 : पारिजात साहित्य परिषद द्वारा 'शंकर दयाल सिंह शिखर सम्मान'।

2001 : 'डॉ० राम प्रसाद सिंह साहित्य पुरस्कार' (मोरहर के पार) कविता संग्रह ला)

2002 : राजभाषा विभाग, बिहार सरकार द्वारा 'पं० मोहन लाल महतो वियोगी पुरस्कार' से सम्मानित ।

2004 : बिहार राष्ट्रभाषा परिषद द्वारा कविता ला 'हिन्दी साहित्य सेवा पुरस्कार' से पुरस्कृत।

परकासित रचना :

1. दमाही में जोतल अदमी (मगही कविता संकलन)
2. मोरहर के पार (मगही कविता संकलन)

3. मगध गुर्रा रहल (मगही कविता संकलन)

4. फल्गु से गंगा (मगही कविता संकलन)

5. बहेलियों के नगर में (हिन्दी कविता संकलन)

'अनुकम्पा' कहानी में हरीन्द्र विद्यार्थी बेरोजगारी के समस्या के माध्यम से समाज के पतनसील हालत के प्रस्तुत करलन हे। आर्थिक स्थिति के बदलेला बेटा अप्पन बाप के भी हत्या करे से न चूके। इहाँ तक कि दहेज रूपी दौलत बार-बार वसूलेला अप्पन पत्नी तक के मार देहे। ई कहानी में दहेज के समस्या आउ हिंसा जइसन असमाजिक आउ अमानवीय भावना के प्रति धेयान दिलावल गेल हे। बेरोजगारी के दंस अदमी के गर्त में भी धकेल देहे। अंत में माय के विसाल हिरदय के परिचय देवल गेल हे जे अप्पन बेटा के सब अवगुन के पी जाहे आउ वात्सल्य प्रेम में भुला जाहे।

अनुकम्पा

'बड़ी तकदीरवला निकललन पाँड़े जी ! कहावतो हे छोटा परिवार, सुखी परिवार, सिरिफ दू गो बेटा, चनेसर आउ दिनेसर।'—रमेसर बोललक।

'हँऽ भाई ! बेटी के कउनो झंझट नयँ, दहेज के जोगार के सवाले कहाँ ? बस जे कमयलन ऊ परिवारे ला।'—संकर हँऽ में हँऽ मिलयलक।

'बेटी रहतइन हल तब न आटा-दाल के भाव मालूम पड़तइन हल। कई जोड़ा जूता टुटिए जतइन हल !'

'अरे का मालूम पड़तइन हल ? नौकरीवाला इंतजाम करहीं लेवऽ हइ। अब तो सिरिफ डेढ़ बरिस रिटायरमेंट के रह गेलइन हे। ओकरा बाद अराम से पेंसन भोगतन।'

'सरकारी नौकरी में एही न हइ, बुढ़ारी भी चैन से कट जा हइ। बड़को बेटा बड़ा लायक निकसलइन। बाप के बड़ा खेयाल रक्खऽ हइ ।'—संकर बोललक।

सुरुजदेव छितिज के ऊ पार छलाँग लगा चुकलन हल। अन्हरिया होहीं पर हल। तेज उड़ान भरइत चिरईं, बसेरा दन्ने उड़ल जा रहल हल। रमेसर आउ संकर पाँड़ेजी के सफलता से जलइत-भुनइत अप्पन-अप्पन घरे चल गेलन।

एक दिन भिनुसरवे मोरंगपुर गाँव में कोहराम मच गेल। धनेसर पाँड़े चल

बसलन। बड़का लड़का चनेसर बाबूजी के मउअत पर जार-जार होके रो रहल हल। अन्हरिया रात के फयदा उठाके कोई उनकर दलान पर सुतले में हत्या कर देलकइन। चनेसर के माय छाती पीट रहल हल, 'रजवा हो रजवा ! केकरो न दुस्मनवाँ, कउन परान हर लेलक हो राम ?'

गाँव वालन ई हिरदय-विदारक दिरिस देख के हक्का-बक्का रह गेलन। लोग चनेसर के ढाढ़स बँधयलन। पड़ोसी लोग बाँस-बल्लम आउ कफन के तइयारी में जुट गेलन। बाँस-घाट ले जाके लास के अंतिम करिया पूरा करल गेल।

सराध में चनेसर के माय खूब खरच करलन। अंगुरी चाटइत रघु ठाकुर बोललन 'न जानी कउन जालिम एत्ता सरीफ अदमी के जान से मार देलकइ। बड़ी मिलनसार हलथिन पाँड़ेजी। न कउनो बेमारी हलइन, न तकलीफ। पता न काहे विधाता अच्छा अदमी के एत्ता जल्दी बोला ले हे ?'

'बहुत लोग तो बेमार होके बिस्तर पर महिन्नो अभुरायल रहऽ हथ आउ कोई सुध लेवे वला भी न रहइन। घरहीं के लोग के दुत्कार-तिरस्कार सुनते जिनगी गुजरऽ हे। पता न केकरा से अदावत हलइन ? खैर, पाँड़ेजी चलते-फिरते चल गेलन !' रसगर जलेबी के चटखारा लेवित तपेसर पासवान बोललक।

'कहियो गाँव में केकरो से मास्टर साहेब के झगड़ा सुनलहुन ?' बड़ी मिट्ठा बोलऽ हलथिन बेचारा !' ठाकुर हुँकार देते बोललक।

सराध खतम हो गेल। कई महीना दउड़-धूप के बाद अनुकंपा के अधार पर चनेसर के नौकरी सँकरी इस्कूल में हो गेलइ। समय के गाड़ी एक मौसम के बाद दूसर मौसम में बढ़े लगल। नौकरी पेसा लड़का के नाम सुनके मालदार जजमान, चनेसर के ड्योढ़ी पर दस्तक देवे लगल। चनेसर के माय ट्रलान के टेबुल-कुर्सी से सजा देलन। इस्टील के नया बर्त्तन, चाय-ट्रे, कप आदि के खरीदारी भेल। जादेतर लोग के घर-परिवार तो पसंद आयल, बाकि दहेज के माँग सुनके ढेर मेहमान बिदक गेल। आखिर एगो पंडीजी डाक बोल के लड़का खरीद लेलन। धूमधाम से लोग पांडेचक बरियाती गेल। लड़की के पिता बरियाती के खूब आवभगत कइलक। धनी ससुराल पाके चनेसर निढाल हो गेल। बरियाती मोरंगपुर लउट आयल। वर-वधु के बधाई देवेला चनेसर के घर में ताँता लग गेल।

कुछ बरिस के बाद चनेसर के घर में एगो लड़का जनम लेलक। धीरे-धीरे दिनेसर भी बालिग हो गेल। गाँव वालन समझयलक कि पेंसन के पूरा रकम चनेसरे

निगलित जाइत हउ। दिनेसर के लगल कि लोग ठीके कहइत हथ। एक दिन ऊ हिम्मत करके चनेसर से पेंसन में हिस्सा माँगलक। चनेसर ओकरा समझयलक—'घर के बेवस्था तो हमरे करे पड़ऽ हे। ई महँगाई में पेंसन कहाँ ठहर पावऽ हे ?'

दिनेसर बोललक—'लटर-पटर न चलतवऽ, बाबूजी खाली तोरे हलथुन कि हमरो हलन, हिस्सा तो हमरा देहीं पड़तवऽ। जेतना दिन चललवऽ ओतना दिन चललवऽ, अब बेइमानी न चलतवऽ।'

दुन्नो भाई झगड़े लगलन। आखिर झगड़ा-झंझट फरिआवे ला पंचायत बइठल। गाँव के लोग दुन्नों भाई में पेंसन आधा-आधा बाँट देलन। माय छोटका साथे रहे लगल।

एन्ने सँकरी गाँव में एगो विधवा के बेटी से चनेसर के आँख चार होवे लगल। इस्क के बोखार माथा पर भूत बनके नाचे लगल। कभी-कभी ऊ हफ्तो मोरंगपुर न लउटे। मेहरारू के चिंता बढ़े लगल। चनेसर टालीगंज में डेरा लेके रहऽ हल। तिरिया के न रहल गेल, ऊ टालीगंज जायला जिद करे लगल। काफी नाकड़-नुकुड़ करला के बाद ऊ घरनी के साथे ले जायला तइयार हो गेल। घरनी सोनिया नया साड़ी झमकयलक। गहना-गुड़िया में सज-सँवर के ऊ पति के साथे बजार दन्ने चल पड़ल। चनेसर ओकरा बिहटा में सिनेमा देखावे के बात कहलक। सोनिया के खुसी के ठेकाना न हल। टिकस कटा के दुन्नो फिलिम देखलन। फिलिम खतम होला पर चनेसर बोललक—'हमनी गाँव चलीं।'

सोनिया आनाकानी कयलक—'गाँव बहुत दूर हे, कुबेर हो जायत।' चनेसर के दबाव के आगे सोनिया वापस घरे चलेला राजी हो गेल। दुन्नो सहर से निकस के गाँव दन्ने चल पड़लन। सुनसान जगह देख के चनेसर सोनिया के साथे एगो बरगद के पेड़ के नीचे रुक गेल।

अचानक एगो औरत के चिल्लाय के अवाज अकास में गूँज उठल, 'बचावऽ ...बचावऽ ...कोई हे, अरे मार डाललक ! ...बाप रे बाप ...!'

सूरज डूबे में अभी देरो हल। दूर खेत-बधार में हरवाहा हर जोतित हलन। कुछ चरवाहा भइँस लेके घरे लउट रहलन हल। मेहरारू के चिकरे के अवाज सुनके ऊ लोग डंडा-पैना लेके बरगद के पेड़ दन्ने दउर पड़लन। लोग चनेसर के

पकड़ लेलन, बाकि तबतक बहुत देर हो चुकल हल। पेट में बच्चा होवे के चलते सोनिया के परान-पखेरू उड़ चुकल हल। चनेसर गिरफ्तार हो गेल।

सोनिया के मौत के खबर सुनके ओकर माय-बाप भी आ धमकलन। हत्या के रिपोर्ट दर्ज भेल। थाना में चनेसर के जम के पिटाई भेल। चनेसर के इकबालिया बयान सुनके लोग दंग रह गेलन। अनुकंपा पर नौकरी के लालच में ऊ बाप के हत्या भी खुद्दे कयलक हल। गाँव वालन के ओकरा से घिरना हो गेल। कई बरिस ऊ जेल में सड़ल।

अंत में माय के ममता जाग उठल। ऊ सोचलन, 'पति तो चलिये गेलन, कम से कम बेटा के तो बचा लेवल जाए। ऊ कई गो वकील हीं जाके गिड़गिड़यलन, बाकि अइसन छुछुंदर के जमानत करावेला कउन वकील तइयार होवे ? अंत में चनेसर के माय के काफी अनुनय-विनय के बाद बैरिस्टर निधि बाबू जमानत के अर्जी कचहरी में पेस करेला राजी हो गेलन। गाँव वालन कहे लगल—'वाह रे, अनुकंपा के लीला !'

अभ्यास-प्रस्न

मौखिक :

1. (क) 'छोटा परिवार, सुखी परिवार'—ई वाक्य काहे कहल गेल हे ? कारन बतावऽ।

   (ख) 'बुढ़ारी भी चैन से कट जा हइ' संकर के ई कहनाम कहाँ तक ठीक हइ ?

   (ग) 'सराध में चनेसर के माय खूब खरच करलन' ई बात से तूँ कहाँ तक सहमत हऽ ? तर्क देइत समझावऽ।

   (घ) दिनेसर अप्पन भाई से पेंसन में से हिस्सा काहे माँगलक ? तोरा समझ से ई कहाँ तक ठीक हे ?

   (ङ) चनेसर गिरफ्तार काहे हो गेल ?

लिखित :

1. कहानीकार हरीन्द्र विद्यार्थी के परिचय पाँच वाक्य में दऽ।
2. पांडेजी के हत्या काहे ला भेल हल ?

3. चनेसर आउ दिनेसर में कउन बात के चलते तकरार होयल ?
4. चनेसर अप्पन मेहरारू के टालीगंज ले जाये में काहे टालमटोल करऽ हल ?
5. चनेसर के जेल गेला पर ओकरा जमानत करावेला कोई वकील काहे न तइयार हो रहल हल ?
6. चनेसर के माय ओकर जमानत लागी वकील खोजेला काहे तइयार हो गेल ?
7. अनुकम्पा पर नौकरी के नियम से फयदा हे कि हानि ?
8. दहेज-प्रथा के कुप्रभाव लिखऽ ।
9. नीचे लिखल पंक्ति के सप्रसंग व्याख्या करऽ :—

   सूरज डूबे में अभी देरी हल। दूर खेत-बधार में हरवाहा हर जोतित हल। कुछ चरवाह भइँस लेके घरे लउट रहलन हल। मेहरारू के चिकरे के अवाज सुन के ऊ लोग डंडा-पैना लेके बरगद के पेड़ दन्ने दउर पड़लन।

भासा-अध्ययन :

1. कहानी के पाँच गो तत्व बतावऽ ।
2. निम्नलिखित मुहावरा के वाक्य में प्रयोग करऽ ताकि अर्थ स्पस्ट हो जाय :

   (क) आना कानी करना

   (ख) आँख चार होना

   (ग) कोहराम मचना

   (घ) छुछुन्दर के जमात

   (ङ) दंग रह जाना
3. पाठ में आयल मगही के अलावे दोसर भासा के पाँच गो सब्द चुनके लिखऽ।

योग्यता-विस्तार :

1. पाठ पढ़के पाठक के मनोदसा पर जे प्रभाव पड़ रहल हे, ओकरा तीन वाक्य में बतावऽ ।
2. ई कहानी में सबसे अच्छा पात्र तोरा समझ से जे हे, ओकरा पर एगो संक्षेप में लेख लिखऽ।

सब्दार्थ :

बुढ़ारी	—	बुढ़ापा
छलाँग	—	फाँदना
भिनुसार	—	भोर
छाती पीटना	—	जोर-जोर से रोना
मालदार	—	अमीर
इस्क	—	प्यार
चिकरना	—	रोना-चिल्लाना

